कविवर रवींद्र वचनामृत

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर के अमृत वचनों का संकलन

- सत्य तो यही है कि कोई किसी को गुमराह नहीं करता, बल्कि हम स्वयं ही गुमराह होते हैं।

- सलाह देने वालों की हर बात को ध्यान से सुनो। बाद में उन पर मनन करो, फिर जिसकी मन गवाही दे उसी को करो। आंखें मूंदकर कभी किसी की बात न मानो।

- शांति के साथ जीवन व्यतीत करना ही एकमात्र सच्चा रास्ता है।

- मैं अपने शिष्यों से कहता हूं कि वे कभी किसी की दीनता का उपहास न उड़ाएं, कल न जाने वह दीन कौन बन जाए, किसे पता है।

- जो लोग मुझसे मिलने आते हैं, वे सोचते हैं जैसे मैं कोई अलौकिक पुरुष हूं। नहीं मेरे भाई मैं भी तुम ही जैसा हूं। मुझमें नया कुछ भी नहीं है। हां, इतना अवश्य है कि मैं अपने कर्तव्य का निष्ठा से पालन करता हूं।

- मनुष्य के हर रूप में ईश्वरीय सत्ता विराजमान है। हां यह बात अलग है कि किसी में दैवीय तत्व हैं तो किसी में आसुरी। ये दोनों ही

भगवान के चिर सनातन रूप हैं।

- विद्यालयी शिक्षा परिवार से प्राप्त उच्छृंखलता को समाप्त करती है और मनुष्य को अनुशासन का पालन करना सिखाती है।
- विनम्रता सभी सुखों की जनक है।
- जीवन रूपी सरिता में अपनी नाव को बराबर खेते चलो। यही तुम्हारा कर्म है और यही प्रभु की इच्छा है।
- सभी का जीवन सार्थक हो सकता है, बशर्ते वह अपने लिए सही मार्ग का चुनाव कर ले। नहीं तो उसका जीवन व्यर्थ है।
- राह चलते हुए सदैव देखते चलो कि तुम्हारे आस-पास का संसार कैसा है। उससे सीखो जीवन में बहुत कुछ सीख जाओगे।
- तुम क्या करना चाहते हो इसका निर्णय अभी करो। प्रभु तुम्हारे तभी सहायक बनेंगे। कल पर निर्णय टालने वालों का कोई साथ नहीं देता है।
- राह चलते भटक जाना साधारण सी बात है। लेकिन भटकने पर अपने घर लौट आना असाधारण बात है।
- व्यक्ति की भावना ही सब कुछ नहीं है। उसका कर्म भी उसमें सम्मिलित है।
- रास्ते पर जब चल ही पड़े तो कंकरीले या पथरीले से घबराना कैसा।
- मैं अपनी राह चुनकर उस पर चलता रहा और अपनी मंजिल पा गया। लेकिन जब तक राह न बनी थी, तब तक बड़ा ही कष्ट था।

- जो अपना कार्य समय पर नहीं करते, बाद में बहुत पछताते हैं।
- हृदय की पूजा ही श्रेष्ठ है। ईश्वर के सच्चे भक्त वही हैं, जो प्रभु को हृदय में बिठाए रखते हैं।
- मुझसे बार-बार पूछा जाता है कि मैं क्या लिखता हूं, कैसे लिखता हूं, तो मेरा एक ही उत्तर है कि लेखन से मुझे शांति मिलती है, इसके अलावा मैं कुछ नहीं जानता।
- जीवन में कई क्षण ऐसे आते हैं जिनसे मानव बहुत कुछ सीख सकता है। जो अपने जीवन के क्षणों से सीखता है, वही मनुष्य है।
- ज्ञान पठन-पाठन से नहीं अनुभव से आता है।
- मृत्यु तो शाश्वत है। इस सत्य का प्रसन्नता से स्वागत करना चाहिए।
- धनिक ही मानव की गरीबी से अधिक लाभ कमाता है।
- न जाने कितने धर्म, संस्कृति और आक्रमणों को अपने हृदय में संजोकर स्पंदित होता है। मैं अब भी अपने देश के बारे में सोचता हूं तो उसको शत्-शत् नमन करता हूं।
- काफी मनन करने के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि कर्म ही प्रबल है। भाग्य अलग है, तो आइये कर्म करें।
- मनुष्य का सहज विश्वास ही उसकी सबसे बड़ी कमजोरी है।
- चलना ही जीवन है और रुकना है मौत। इसलिए बराबर चलते ही रहो।

- मनुष्य को कठिनाई में पड़ने पर अपना सब कुछ प्रभु को सौंप देना चाहिए कि हे मुरारे तुम्हारी माया तुम्हारे हवाले और निश्चिंत होकर सो जाएं।

- मैंने सदैव अपने आस-पास के वातावरण से परम शांति पाई है। यह शांति मुझे परमेश्वर की शांति प्रतीत होती है। जब आप शांत, आंखें मूंदकर बैठ जाते हैं तो परमात्मा तुम्हारे अस्तित्व से तुम्हारा परिचय करा देते हैं।

- हम मनुष्य क्यों हैं? और क्या हमारे कर्तव्य हैं, इस पर मैंने बहुत मनन किया लेकिन एक बात शायद किसी ने न सोची हो कि यह सब किसकी कृपा है। जिसने इस पर मनन किया है वही मनुष्य है।

- सभी के लिए हमारे मन में करुणा और दया होनी चाहिए। इस तरह हम अपना जीवन धन्य बनाते हैं।

- जब मृत्यु शाश्वत सत्य है तो मनुष्य हाय-तौबा क्यों मचाता है। शायद अपनी कीर्ति को अक्षय रखने के लिए। लेकिन जीवन के लिए संघर्ष करना ही पड़ता है, इसलिए जीवन में जितनी पवित्रता होगी, उसका फल भी उतना ही स्थायी होगा, ऐसा मेरा निजी विचार है।

- बड़ी-बड़ी योजनाओं की अपेक्षा छोटी-छोटी योजनाओं पर काम किया जाए तो ज्यादा लाभ अर्जित किया जा सकता है। शायद इसीलिए मैं कविताएं लिखता हूं, बड़े-बड़े ग्रंथ नहीं।

- मेरा अपना विचार है कि प्रत्येक रचनाकार अपनी रचना में जीवन के अनुभूत सत्य ही उजागर करता है, इसलिए प्रत्येक रचनाकार की कृति को बड़ी रुचि से पढ़ना चाहिए।

- गुलामी दो तरह की होती है। एक तो बाहरी और दूसरी भीतरी। बाहरी गुलामी से छुटकारा पाना संभव है, लेकिन भीतरी गुलामी से छुटकारा पाना संभव नहीं।

- क्या केवल आदमी का बाह्य रूप ही सब कुछ होता है। आदमी के भीतर एक और भी आदमी रहता है।

- जीवन तो सागर के समान है और इस सागर में जब हमारी जीवन रूपी नौका डगमगाती है तो हम घबरा जाते हैं। ऐसे में प्रभु ही हमारे सहायक होते हैं।

- मैंने कविता के बारे में बहुत ज्यादा सोचा है कि आखिर वह क्या है। मेरे विचार में जब अंत:करण गुनगुनाने लगता है तो शब्द स्वयं ही प्रस्फुटित हो उठते हैं।

- जीवन में केवल एक ही सत्य है और वह है मृत्यु। बाकी सब कुछ मिथ्या है। इस सत्य को समझकर ही मैंने सदैव अपना कार्य किया है। आगे की प्रभु जानें।

- सभी मनुष्य एक से हैं और सबका एक ही लक्ष्य है कि मानव निष्कलंक, कलुषताहीन हो, मनुष्य, मनुष्य को प्यार करे, यही सर्वत्र मैंने पाया है। इसीलिए मैं मानवता के गीत गाता हूं।

- तुम अपने जीवन पथ पर अकेले चलो। अपने मार्ग को देखो, पहचानो और आगे बढ़ते जाओ। इसकी चिंता न करो कि दुनियां तुम्हें क्या कहती है।

- आषाढ़ और सावन का मास मनुष्य के लिए प्रकृति का श्रेष्ठतम वरदान है। इसका प्रसन्नतापूर्वक अभिनंदन प्रत्येक मनुष्य को करना चाहिए।

- एक बात मैंने जरूर देखी कि मनुष्य बाह्य आडंबर बहुत करता है। ईश्वर की आराधना में भी उसने बाह्य आडंबर को ही अपना रखा है। जाने कितना और आडंबर हम फैलाएंगे।

- जब भी मैं नील गगन को देखता था तो मुझे ऐसा भासता था कि आकाश में परियों का मेला लगा है। घण्टों मैं नीलाकाश को निहारा करता। शायद इसीलिए मैं कवि बन गया। लेकिन मेरी कविता तो प्रभु को समर्पित है।

- बार-बार उद्देश्य परिवर्तन मनुष्य को खोखला कर देता है। मेरे कहने का आशय यह है कि सदैव एक ही पथ पर चलो। वही पथ तुम्हें सब कुछ देगा।

- हर व्यक्ति के जीवन में संध्या आती है इसलिए मृत्यु का प्यार से आलिंगन करो।

- सादा जीवन, उच्च विचार। यही मानव जीवन की सफलता का राज है।

- जीवन में आने वाले भयों से डरो मत। सब कुछ परमात्मा पर छोड़ दो। मेरा तो ऐसा ही मानना है।

- सब उसका मजाक बनाते थे। कोई उसकी सहायता न करता था। लेकिन वह अपनी ही धुन में खोया रहता। जब वह इस तरह से रहने लगा तो सबका ध्यान उस पर से हट गया। इसलिए लोग क्या कहते

हैं, इसकी चिंता कभी नहीं करनी चाहिए।

- निरंतर कार्य में निमग्न व्यक्ति कभी दुखी नहीं रहता।

- जीवन एक ताश रूपी महल है। जरा सी हवा लगी कि ढह पड़ा। इसके बावजूद जीवन हमें प्यारा लगता है। सब कुछ अपना मालूम पड़ता है। उसे ही मायाजाल कहा गया है। मैंने भी इसे अनुभव किया है इसलिए इस ओर से मैं सतर्क रहता हूं।

- अपने जीवन की डोर प्रभु के कर कमलों के हवाले कर दो। फिर देखोगे कि तुम्हारा प्रत्येक कार्य स्वयं ही बनने लगेगा।

- जो करना है, अभी कर डालो, क्या पता कल जिंदगी की शाम हो जाए क्योंकि मौत कभी भी आ धमक सकती है।

- सुख और दुख जीवन रूपी गाड़ी के दो पहिए हैं। इसको हांकता हुआ मनरूपी सारथी संसार में विचरण करता है। सुख में अहंकार और दुख में रोना तो मानव जीवन का अपना ही दोष है। मेरे विचार मे मनुष्य जीवन में समरसता से ही सच्चा सुख प्राप्त कर सकता है।

- मनुष्य जब जीवन रूपी पथ पर अग्रसर होता है तो समझता है कि वह सब कुछ सहजता से पा लेगा, लेकिन उसे वह मृगतृष्णा के समान प्रतीत होने लगता है और वह जीवन के सुखों से वंचित हो जाता है। अपनी पराजय को वह सच्चे मन से स्वीकार कर पाता है।

- जीवन तो काली बदली के समान है कि बरसे या न बरसे। या कोई हवा को झोंका ही उड़ा ले जाए।

- जीवन पथ तो कांटों से भरा है। इस पर साहस धैर्य के बिना सफलता नहीं मिलती।

- जीवन में काम के भार से घबराना मनुष्य की कोरी मूर्खता है।

- जितना जीवन में जो दुख उठाता है, जीवन में वह उतना ही आनंद पाता है। जीवन का आनंद ही सुख दुख में निहित है।

- माता के समान कोई नहीं हो सकता। आज मैं जो कुछ हूं, अपनी माता की वजह से हूं। मैं जो भी रच सका उसमें मां का स्वर ही परिलक्षित होता है। मेरी रचनाओं में उनका ही हास-विलास और रूदन है। यही मेरे जीवन का वास्तविक सत्य है।

- जीवन रूपी कठिन यात्रा को मानव को हंसते हुए पार करना चाहिए।

- प्रेम तो अलौकिक होता है, यदि वह मन से उपजा हो। आंखों से उपजे प्रेम में वासना निहित होती है।

नोबल पुरस्कार से सम्मानित कविंद्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की अमरकृति

गीतांजलि (अंश)

दो शब्द-

कविंद्र रवीन्द्रनाथ टैगोर एक ऐसे अनमोल रत्न थे, जिसे सृष्टि ने भारत मां की गोद में देकर उसे धन्य किया और किया प्रत्येक भारतीय को गौरवान्वित। इस रत्नश्रेष्ठा ने अपने काव्य-प्रकाश से पूरे विश्व को आलोकित कर दिया। 'गीतांजलि' के रूप में उनके द्वारा दिये प्रकाश से आज भी विश्व साहित्य जगमगा रहा है। यूं तो रवीन्द्रनाथजी ने अपनी लेखानी का जादू हर विधा पर बिखेरा है, किंतु 'गीतांजलि' उनकी अमर कृति है।

गीतांजलि

1-

अपनी चरण धूलि के तल में
मेरा शीष झुका दो
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।
अपने को गौरव देने को
अपमानित करता अपने को
अपने आप में घूम-घूम कर
मरता हूं क्षण-क्षण मैं।
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।

देव! अपने कार्यों का
आत्म प्रचार न करूं
तुम यह इच्छा
मेरे जीवन में पूर्ण करो।
मुझको अपनी चरम शांति दो
प्राणों में परम कांति हो
आप खड़े होकर मुझे दें ओट
अपने हृदय कमल में।
देव! डुबा दो मम अहंकार
मेरे अश्रुजल में।

2-

मेरे मन में जो अनगिनत वासनाएं भरी हैं
उन सबसे वंचित करके

तुमने बचा लिया।
संचित रहे यह करुणा
इस कठोर जीवन में।

बिन मांगे जो मुझे दिया है
ज्योति, गगन, तन-मन, प्राण दिया है।
दिन-दिन मुझे बना रहे तुम
उस महादान के योग्य।
अति वासना के संकट से
मुझे उबार कर।

कभी भूलता, कभी चलता
किंतु, तुम्हें लक्ष्य बनाकर
उसी राह पर
निष्ठुर! सामने से हट जाते हो पर
है मालूम यह दया है तुम्हारी
अपनाने को ठुकराते तुम
पूर्णतर बना इस जीवन को
अपने मिलन योग्य कर लोगे।
आधी-इच्छा के इस संकट से
मुझे उबार लोगे।

3-

अनजानों को जानकर
राह कितने घरों को दी
किया दूर को निकट
बंधु कहा भाई परायों को
निवास छोड़ना पुराना जब-जब जाता मैं
जाने क्या हो तब, मन यही सोच घबराता,
नित नूतन बीच तुम तो पुरातन
यह सत्य मैं बिसरा जाता।

किया दूर को निकट
बंधु कहा भाई परायों को।

जीवन और मरण मे, अखिल भुवन में
जहां कहीं भी अपना लोगे
जनम-जनम के जाने-अनजाने,
तुम्हीं सबसे मुझे परिचित करा दोगे।
तुम्हें जान लूं तो न रहे कोई पराया
न कोई मनाही, न कोई डर
सारे रूपों में तुम हो जागे
सदा दरस तुम्हारा प्रभु हो।
किया दूर को निकट,
बंधु कहा भाई परायों को।

4-

विपदाओं से मुझे बचाना
यह प्रार्थना नहीं मेरी।
प्रार्थना है-
विपदाओं में न होऊं भयभीत
न ही दुखों में चित्त व्यथित हो
भले ही न दो सांत्वना।
दुखों पर पाऊं विजय मैं।
संबल भले ही न जुटे
पर,
बल ना मेरा फिर भी टूटे।
क्षति जो हो घटित
जगत देता केवल वंचना
अपने मन में न मानूं कोई क्षय।

मुझे संकटों से बाहर निकालो
यह प्रार्थना नहीं मेरी

उनका कर सकूं सामना
इतना अवश्य दो बल।
मेरा भार घटाकर तुम
भले ही न भी दो सांत्वना
ढो पाऊं वह भार इतना हो निश्चय।
शीश झुकाए जब आए सुख
तो पहचान लूं मैं तुम्हारा मुख
दुख की रात में डूबी हो निखिल धरा
मैं करूं न तुम पर किसी प्रकार का संशय
बस यही है मेरी तुमसे प्रार्थना।

5-

हे अंतरयामी! मम अंतर विकसित करो
उज्जवल करो, निर्मल करो
कर दो सुंदर हे!
उद्दत करो जागृत करो,
कर दो निर्भय हे!
मंगल करो, निरापद करो, नि:संशय कर दो हे!
हे अंतरयामी! मम अंतर विकसित करो

सबसे युक्त करो मुझको हे
मुक्त करो सब बंधन से।
संचार करो सारे कर्मों में
शांतिमय सब छंद।
चरण-कमल में मेरा चित्त निष्पंदित कर दो हे!
नंदित करो, प्रभु नंदित करो, नंदित कर दो हे!
मम अंतर विकसित करो
हे अंतरयामी!

6-

प्रेम-प्राण से, गंध-गान से, आलोक-पुलक से

निखिल गगन तल-भूमंडल को प्लावित करके
झर रहा हर क्षण तुम्हारा अमल अमृत-निर्झर।

चारों दिशाओं की सारी बाधएं आज तोड़कर
जाग रहा आनंद अनोखा मूर्त रूप-धर,
निविड़ सुधा से जीवन हृदय उठा है भर।

चेतना मेरी उस कल्याण रस के मधुर स्पर्श से
शतदल कमल सी खिली परम हर्ष से।
उसका सब मधु तम्हारे चरण धर कर।
नीरव ज्योति-जगी हृदय प्रांतर में
मुक्त ऊषा के उदय की आभा निर्मल
हटा नयन का अलस आवरण।

7-

तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में
आओ तुम गंध-वर्ण में, आओं तुम गीतों में।
आओ तुम पुलकित अंगों में सरस रस भर
आओ तुम मुग्ध मुदित नयनों में।
तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में।

आओ हे कांतविमल, उज्जवल-तर आओ।
आओ स्निग्ध प्रशांत सुंदरतर आओ।
आओ विधान के बहुरंगी रूपों में।
आओ दुख में, सुख में, आओ निरंतर अंतरतर में।
आओ दैनंदिन सकल कर्मों में।
आओ तुम सब कर्मों के अवसानों में।
तुम आओ प्राणों में नव-नव रूपों में।

8-

धान के खेतों में आज धूप-छांव

कर रही लुका-छिपी का कौतुक
किसने छोड़ी नील गगन में
श्यामल मेघ की नौका।
आज भौंरा भूल रहा मधुरस पीना
उड़ फिर रहा वह प्रकाश में डूबा,
यह कैसा मेला नदी तीर पर
चकवा-चकवी का।

आज नहीं घर मैं जाऊंगा भाई
आज न जाऊंगा घर।
उघाड़कर अंबर लूट लूंगा
आज मैं सारी बहार।
ज्वार का वो फेनिल जल
उड़ता फिर रहा मरुत लहर पर खिलखिल
आज अकारण बजाकर बंसी
बीतेगा यह सारा दिन।
आज नहीं घर मैं जाऊंगा भाई
धान के खेतों में आज धूप-छांव
कर रही लुका-छिपी का कौतुक।

9-

आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।
डांड पकड़ लो बैठकर सब
खेता चल अम्लान।
जो भी है सब बोझ उठाए
दुख की नैया पार लगाए
चला चल तरंगों पर
भले चले जाएं प्राण।
आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।

कौन रोकता है पीछे से
मना करे है कौन।
डर की बात करे कौन आज
डर का हमें है ज्ञान
कौन पाप ग्रह दशा कौन जो
सुख के किनारे रहूं मैं बैठा
पकड़ ले जोर से पाल की डोरी
गाते, सुख से कर प्रयाण
आनंद के सागर से
आया है ज्वार लिए तूफान।

10-

तुम्हारे पूजा के थाल में
सजाऊंगा आज दुख के अश्रुधार।
जननी, बनाऊंगा ग्रीवा की
मंजुला-मंजुल मोती माल।
रवि-शशि लिपटे हैं आज
हार बने चरणों में।
मेरे दुख से शोभित होगा
तेरा वक्ष विशाल।

यह तुम्हारा सब धन-धान्य
तुम बोलो क्या करूं इसका
देना चाहो तो दो मुझको
लेना चाहो तो ले लो।
दुख है मेरे ही घर का धन है
तुम पहचानो खरे-रतन को।
तुम्हारे प्रसाद से उसे खरीदूं
यह मेरा अहंकार।

तुम्हारे पूजा के थाल में
सजाऊंगा आज दुख के अश्रुधार।

11-

बांधा हमने कास-गुच्छ और गूंथी शेफाली माला।
नए धान की मंजरियों से
भर लाया हूं अपना डाला।
हे शारदे! अपने
श्वेत मेघ के रथ पर आओ
आओ निर्मल नील गगन के पथ से
आओ धुले सुश्यामल ज्योति से झलमल
वन पर्वत कानन स।
माथे शतदल का मुकुट
शिशिर ज़डित मणिमाला से।
पुष्प मालती के झर झर कर
आसन बने बिछे निर्जन में
गंगा तट पर, कुंजों में,
पदतल पर, हंसमन तत्पर।

तुम करो गुंजार तार
अपनी स्वर्ण वीणा के
मृदुल मधुर-मधुर झंकार
जाए गल क्षणिक अश्रुधार खिल जाए संसार
पलक ओट से झांकता
झिलमिल करता पारसमणि
करुणामय होकर झुला दो
वही ज्योति निर्मल मन की
बनें स्वर्णिम सभी संभावनाएं
हो जाए उजियारा अंधकार में भी।

12-

लगी चमाचम धुले पाल में
मंद मीठी बयार।
देखी नहीं कभी भी ऐसी
सधी हुई डांड पतवार।

लाता कौन समंदर पारे
वह सुदूर का धन रे!
चाहता लुट जाना मन रे।
चाहता फेंक जाना इसी किनारे
नई चाहनाओं को।

रिमझिम-रिमझिम झरता जल पीछे
गुरु-गुरु गरज रहा है घन
छिटक-छिटक पड़ता मेघों से
मुखड़े पर अरुण किरण का कण

ओ खेवनहार, कौन हो तुम,
किसके हास्य-रूदन के संबल।
सोच रहा यह चंचलचित्त,
किस लय में बांधोगे सितार
किस लय में गाओगे कौन सा मंत्र।

13-

मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।
हरसिंगार के आसपास में
गिरे फूलों के हास-वास में
ओस नहाई घास-घास में रक्तरंजित पग धर-धर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

आंचल धूप-छांव का
लुट-लुट जाता है वन-वन में।
फूल उसकी ओर देखकर
जाने क्या कहते हैं मन-मन में।
आओ, तुम्हें हम करेंगे वरण,
मुंह का परदा करो हरण,
बादल का छोटा सा टुकड़ा
दोनों हाथों से दूर हटाकर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

वन देवी के द्वार-द्वार पर
बज रही है गहरी शंख ध्वनि,
नभ-वीणा के तार-तार पर
उठ रहा स्वागत गीत।
मेरे ही उर में शायद कहीं बजते स्वर्ण नुपुर
सभी भाव, सभी कर्मों में शिला निचोड़ी रस भर
मेरे नयन हो गए मुग्धमय
मैंने यह क्या देखा जी भर।

14-

हे जननी, तेरे करुण चरण कल्याणी।
मैंने देखे प्रभात किरण में।
जननी, तेरी मनहर मंजुल वाणी,
भर गई चुपचाप मौन संपूर्ण गगन में।

अखिल भुवन में तुझे शीश नवाऊं
सब कर्मों में तुझे प्रणाम करूं
आत तन-मन-धन सब करूं निछावर
भक्ति-भाव से तेरी पावन पूजा-अर्चन में।

हे जननी, तेरे करुण चरण कल्याणी।
मैंने देखे प्रभात किरण में।

15-

उन्मुक्त उदार अखिल भुवन में
गूंज रहा आनंद का गीत,
वो गीत न जाने कब गहरा होकर
गूंजेगा मेरे हृदय में।

जल-नभ ज्योति मधुर बयार सब
इनको प्यार करूंगा मैं कब,
ये कब अंतर में आकर
बैठेंगे विभिन्न रूप धर।

नयन बिछाते ही कब होंगे
प्राण पुलक से प्रमुदित
जिस पथ से मैं चला जाऊंगा
सबको देकर तुष्टि।
तुम हो सत्य, यही सत्य
कब किस क्षण में
सहज हो उठेगा जीवन में?
कब मुखर हो उठोगे तुम
संपूर्ण मेरे सर्वस्व पर
इसीलिए शायद उन्मुक्त उदार अखिल भवन में
गूंज रहा आनंद का गीत।